

كيفية صلاة النبي - صلى الله عليه

- وسلم

संपूर्ण रूप से वज़ू करना

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ का तरीका

-

आदरणीय शैख

अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा दयालु अत्यंत दयावान है।

समस्त प्रकार की प्रशंसा केवल अल्लाह की है, तथा प्रशंसा एवं शांति प्राप्त हो उसके बन्दे और रसूल, हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उनके परिवार एवं सहाबा पर। इसके बाद अब मूल विषय पर आते हैं :

ये कुछ संक्षिप्त बातें हैं, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ के तरीके को स्पष्ट करने के लिए लिखे गए हैं। मैं इन्हें हर मुसलमान पुरुष और महिला के समक्ष पेश करना चाहता हूँ, ताकि इनको पढ़ने वाला हर व्यक्ति नमाज़ के संबंध में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने का प्रयास करे। क्योंकि आपका फ़रमान है: "तुम उसी प्रकार नमाज़ पढ़ो, जिस प्रकार मुझे नमाज़ पढ़ते हुए देखते हो।" इसे इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है। अब पाठकगण की सेवा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ का तरीका प्रस्तुत है :

संपूर्ण रूप से वज़ू करना

1- संपूर्ण रूप से वज़ू करना। यानी उसी तरह वज़ू करना, जिस तरह अल्लाह ने आदेश दिया है। अल्लाह के इस आदेश का पालन करते हुए :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ﴾

"हे ईमान वालों ! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने मुंह तथा कोहनियों सहित अपने हाथों को धो लिया करो और अपने सिर का मसह कर लो, तथा अपने पैर टखनों सहित धुल लो।" पूरी आयत देखें।

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस कथन का अनुकरण करते हुए : "बिना वज़ू के नमाज़ स्वीकार नहीं की जाती।"

क़्िबला की ओर मुख करना

2- नमाज़ी अपना चेहरा क़िबला (काबा) की ओर पूरे शरीर के साथ कर ले। चाहे वह जहाँ भी हो। तथा अपने दिल से उस नमाज़ की, फ़र्ज हो कि नफ़ल, नीयत करे, जिसे अदा करना चाहता है। ज़बान से नीयत न करे। क्योंकि, ज़बान से नीयत करना शरीयत

सम्मत नहीं, बल्कि बिदअत है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रजियल्लाहु अन्हम ने कभी ज़बान से नीयत नहीं की है। नमाज़ पढ़ रहा व्यक्ति यदि इमाम हो या अकेले नमाज़ पढ़ रहा हो, तो अपने सामने एक सूत्रह (आड़) रख ले तथा उसी की ओर मुंह कर के नमाज़ पढ़े। क़िबला की ओर मुंह करना नमाज़ के लिए शर्त है। बस उन विशेष परिस्थितियों को छोड़कर, जो इस्लामी विद्वानों की पुस्तकों में विस्तार से वर्णित हैं।

तकबीर-ए-तहरीमा, तकबीर कहते समय दोनों हाथों को उठाना और उसके बाद दोनों हाथों को सीने पर रखना

3- तकबीर-ए-तहरीमा के तौर पर अल्लाहु अकबर कहे तथा उस समय नज़र सजदा के स्थान पर रखे।

4- तकबीर-ए-तहरीमा कहते समय अपने हाथों को कंधों के समानांतर अथवा कानों के निचले भाग (कर्णपाली) तक उठाए।

5- अपने दोनों हाथों को सीने पर इस ढंग से रखे कि दाहिना हाथ बाएं हाथ की हथेली, कलाई एवं बाजू पर हो। क्योंकि, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसा ही प्रमाणित है।

नमाज़ आरंभ करने की दुआ

6- नमाज़ आरंभ करने की दुआ पढ़ना सुन्नत है। नमाज़ आरंभ करने की दुआ यह है : "हे अल्लाह! मेरे तथा मेरे गुनाहों के बीच उतनी दूरी पैदा कर दे, जितनी दूरी तूने परब और पश्चिम के बीच रखी है।" ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों से साफ कर दे, जैसे उजले कपड़े को मैल-कचैल से साफ किया जाता है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से पानी, बर्फ और ओले से धो दे।" तथा यदि चाहे तो इसके स्थान पर यह दुआ पढ़े : "हे अल्लाह! पवित्र है तू हर प्रकार के दोष एवं त्रुटि से। समस्त प्रकार की प्रशंसाएं तेरे लिए हैं। बरकत वाला (केल्याणकारी) है तेरा नाम और उच्च है तेरी शान तथा तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं।" ¹ यदि इन दोनों के बजाय अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से साबित नमाज़ आरंभ करने की कोई और दुआ पढ़ ले, तब भी कोई हर्ज नहीं है। वैसे, बेहतर यह है कि कभी इसे पढ़े और कभी उसे। क्योंकि, इस तरह पूर्णरूपेण नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण हो जाता है। फिर इसके बाद "أعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمن الرحيم" कहे और सूरा फ़ातिहा पढ़े। क्योंकि, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है : "जिसने सूरा-ए-फ़ातिहा नहीं पढ़ी, उसकी नमाज़ ही नहीं।" सूरा फ़ातिहा के बाद जहरी (उच्च ध्वनी की किरात वाली) नमाज़ों में ज़ोर से तथा

¹ बुखारी अल-अज़ान (711), मुस्लिम अल-मसाजिद व मवाज़िउस-सलाति (598), नसई अल-इफ़ितताह (895), अबू दावूद अस-सलात (781), इब्ने-ए-माजह इक़ामतुस-सलात वस-सुन्नह फ़ीहा (805), अहमद (2/231), दारिमी अस-सलात (1244)।

सिरी (धीमी आवाज़ की किरात वाली) नमाजों में धीमे से आमीन कहे। फिर कुरआन का जो भाग याद हो उसका पाठ करे। उत्तम यह है कि जुहर, अस्त्र और इशा की नमाज़ में सूरा अल-फातिहा के बाद औसात-ए-मुफ़स्सल से पढ़े, फ़ज़्र की नमाज़ में तिवाल-ए-मुफ़स्सल से पढ़े तथा मग़ि़ब में कभी तिवाल-ए-मुफ़स्सल से पढ़े और कभी औसात-ए-मुफ़स्सल से, ताकि इस विषय में वर्णित समस्त हदीसों पर अमल हो जाए।

रुकू, उससे उठना और उससे जुड़ी बातें

7- रुकू करते समय तकबीर (अल्लाह अकबर) कहे, अपने हाथों को कंधों या कानों के बराबर उठाए, अपने सर को पीठ के समानांतर रखे, अपने हाथों को घुटनों पर रखे, उंगलियों को फैला कर रखे, रुकू इत्मीनान से करे तथा यह दुआ पढ़े : "سبحان ربي العظيم" (अर्थात : मेरा महान रब पवित्र है)। बेहतर यह है कि इस दुआ को तीन या इससे अधिक बार दोहराए। इसके साथ-साथ यह दुआ कहना भी मुस्तहब है : "اللهم وبحمدك، اللهم اغفر لي" (अर्थात : ऐ अल्लाह! तू पवित्र है, अपनी प्रशंसा के साथ। ऐ अल्लाह! मुझे माफ कर दे।)²

8- रुकू से अपना सर उठाते समय अपने हाथों को कंधों या कानों के बराबर उठाए और यदि इमाम हो या अकेले नमाज़ पढ़ रहा हो, तो कहे : "سمع الله لمن حمده" (अर्थात : अल्लाह ने उस व्यक्ति की बात सुन ली, जिसने उसकी प्रशंसा की।) फिर खड़े होकर कहे : "ربنا ولك الحمد حمداً كثيراً طيباً مباركاً فيه ملء السموات وملء الأرض وملء ما بينهما وملء ما شئت من شيء بعد" (अर्थात : हे हमारे पालनहार! सब प्रशंसा तेरे ही लिए है, भरपूर, पवित्र, और बरकत वाली प्रशंसा, जो आसमानों को भर दे, ज़मीन को भर दे, और जो कुछ उनके बीच है उसे भर दे, और जो कुछ तू चाहे उसके बाद उसे भी।) .. लेकिन यदि इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हो, तो रुकू से उठते समय बस इतना कहे : "ربنا ولك الحمد" "حمداً كثيراً طيباً مباركاً فيه ملء السموات وملء الأرض وملء ما بينهما وملء ما شئت من شيء بعد" यदि उनमें से हर एक, यानी इमाम, मुक़तदी और अकेला नमाज़ पढ़ने वाला, इस दुआ में यह वाक्य भी बढ़ा ले : "أهل الثناء والمجد أحق ما قال العبد وكلنا لك عبد، اللهم لا مانع لما أعطيت ولا ينفع ذا الجدم منك الجدم" (अर्थात : ऐ प्रशंसा और महिमा के योग्य! बंदे की कही हुई सबसे बच्ची बात यही है। हम सभी तेरे ही बंदे हैं। ऐ अल्लाह! जो तू दे, उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोक ले, उसे कोई देने वाला नहीं तथा किसी बड़े धनवान को उसका धन तेरे सामने लाभ नहीं पहुँचा सकता।)³ तो बेहतर है। क्योंकि, यह अल्लाह के नबी सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम से साबित है। मुस्तहब यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने हाथों को सीने पर उसी प्रकार रख ले, जिस प्रकार रुकू से पहले खड़े होने की अवस्था में रखा हुआ था। क्योंकि, वाइल बिन हुज़्र और सहल बिन साद रज़ियल्लाहु

² बुखारी तफ़सीर अल-कुरआन (4683), मुस्लिम अस-सलात (484), नसई अत-ततबीक (1122), अबू दावूद अस-सलात (877), इब्न-ए-माजह इक़ामतुस-सलात वस-सुन्नह फ़ीहा (889)।

³ मुस्लिम अस-सलात (477), नसई अत-ततबीक (1068), अबू दावूद अस-सलात (847), अहमद (3/87), दारिमी अस-सलात (1313)।

अन्हूमा से वर्णित हदीसों इस अमल के अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित होने की पुष्टि करती हैं।

सजदा, सजदे से उठना तथा इससे संबंधित बातें

9- "अल्लाह अकबर" कहते हुए सजदा करे और संभव हो तो हाथों से पहले घटनों को ज़मीन पर रखे लेकिन, अगर इसमें कठिनाई हो, तो घटनों से पहले अपने हाथों को ज़मीन पर रखे। सजदे की अवस्था में अपने पैरों और हाथों की उंगलियों को क़िबला की ओर रखे और हाथों की उंगलियों को एक साथ मिलाकर खोलकर रखे। सजदा इन सात अंगों पर होना चाहिए : ललाट एवं नाक, दोनों हाथ, दोनों घटने, दोनों पैरों की उंगलियों के अगले भाग का भीतरी हिस्सा। सजदा में यह दुआ पढ़े : "سبحان ربي الأعلى" (अर्थात : मेरा उच्च रब पवित्र है)। सुन्नत यह है कि इस दुआ को तीन बार अथवा उससे अधिक कहा जाए। इस दुआ के साथ यह पढ़ना भी मुस्तहब है : "سبحانك اللهم ربنا وبحمدك، اللهم اغفر لي" (अर्थात : ऐ अल्लाह! तू पवित्र है, अपनी प्रशंसा के साथ, ऐ अल्लाह! मुझे माफ कर दे।) सजदे में अधिक से अधिक दुआ करे। क्योंकि, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है : (जहाँ तक रुक की बात है, तो उसमें अपने रब की महानता का बखान करो, तथा सजदों में अधिक से अधिक दुआ करो, क्योंकि इस बात की बड़ी संभावना है कि तुम्हारी दुआ स्वीकार की जाएगी।) सजदे में अपने रब से दुनिया और आखिरत की भलाई माँगे, चाहे नमाज फर्ज हो या नफल। सजदा करते समय अपनी बांहों को पहलू से, पेट को जाँघों से और जाँघों को पिंडलियों से अलग रखे, तथा अपनी कोहनियों को ज़मीन से ऊपर उठा कर रखे, जैसा कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : (सजदा ठीक से किया करो और तुममें से कोई अपनी कोहनियों को कुत्ते की तरह न फैलाए।)

दो सजदों के बीच बैठना और इसका तरीका

10- "अल्लाह अकबर" कहते हुए अपने सर को उठाए, अपना बायाँ पैर बिछाकर उसपर बैठे, अपना दाहिना पैर खड़ा रखे (और उसकी उंगलियों को क़िबला की ओर रखे), अपने हाथों को अपनी जाँघों और घटनों पर रखे तथा यह दुआ पढ़े : "رب اغفر لي وارحمني، رب اغفر لي وارحمني" (अर्थात : ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा कर, मुझपर रहम कर, मुझे सीधा रास्ता दिखा, मुझे रोज़ी दे, मुझे स्वस्थ रख और मेरी ज़रूरत पूरी कर।) यहाँ इत्मीनान से बैठे।

11- फिर "अल्लाह अकबर" कहते हुए दूसरा सजदा करे और इसमें वही सब करे, जो पहले सजदे में किया था।

12- "अल्लाह अकबर" कहते हुए अपना सर उठाए तथा जिस प्रकार से दो सजदों के बीच में बैठा था, उसी प्रकार थोड़ी देर के लिए बैठ जाए। इस बैठक को जलसा-ए-इस्तिराहत (विश्राम की बैठक) कहते हैं, जो कि मुस्तहब है। यदि इसे छोड़ भी दे, तो कोई हर्ज नहीं है। इसमें न कोई जिक्र है और न दुआ। फिर, यदि कठिनाई न हो तो अपने दोनों घटनों पर टेक लगाकर खड़ा हो जाए। यदि ऐसा करना कठिन हो, तो ज़मीन पर टेक लगाकर खड़ा हो जाए। खड़े होने के बाद सुरा फ़ातिहा पढ़े एवं क़ुरआन का जितना भाग पढ़ सकता हो, पढ़े। फिर वही सब कुछ करे, जो पहली रक़ात में किया था।

दो रकात वाली नमाज़ में तशहहूद के लिए बैठना तथा उसका तरीका

13- नमाज़ दो रकात वाली हो, जैसे फ़ज़्र, ज़ुमा एवं दोनों ईदों की नमाज़ें, तो दूसरे सुजदे से सर उठाने के बाद तशहहूद में इस तरह बैठे कि दाहिना पांव खड़ा हो और बायां पांव ज़मीन पर बिछा हुआ। दाएँ हाथ को दाईं जाघ पर रखकर हाथ की उंगलियों को मोड़ ले। किन्तु, शहादत की उंगली (तर्जनी) को खुला रखे तथा इसके द्वारा अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) की तरफ़ इशारा करे। यदि दाहिने हाथ के किनारों की दो उंगलियों (कनिष्ठा एवं अनामिका) को मोड़ ले, अंगूठे को बीच वाली उंगली (मध्यमा) के साथ मिलाकर गोलाकार (परिधि) बना ले तथा शहादत की उंगली (तर्जनी) से इशारा करे, तो यह भी अच्छा है। क्योंकि, दोनों ही तरीके अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित हैं। बल्कि, सबसे अच्छा यह है कि कभी पहले तरीके पर अमल करे और कभी दूसरे तरीके पर। बाएँ हाथ को बाईं जाघ एवं घुटने पर रखे। फिर इस बैठक में तशहहूद पढ़े, जो इस प्रकार है : "اللّٰحِيَاتِ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوَاتِ وَالطَّيِّبَاتِ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَىٰ عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِينَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ" (अर्थात: सभी प्रकार की प्रशंसाएं, नमाज़ें और पवित्र चीज़ें केवल अल्लाह के लिए हैं। ऐ नबी! आपपर सलाम (शांति), अल्लाह की दया और उसकी बर्कतें अवतरित हों। शांति हो हमपर और अल्लाह के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि निःसंदेह मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल (संदेशवाहक) हैं।) इसके बाद कहे : "اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ إِبْرَاهِيمٌ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ، وَبَارِكْ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ إِبْرَاهِيمٌ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ" (अर्थात : (ऐ अल्लाह! मुहम्मद एवं उनकी संतान-संतति की उसी प्रकार से प्रशंसा कर, जिस प्रकार से तू ने इब्राहीम एवं उनकी संतान-संतति की प्रशंसा की है। निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद तथा उनकी संतान-संतति पर उसी प्रकार से बर्कतों की बारिश कर, जिस प्रकार से तूने इब्राहीम एवं उनकी संतान-संतति पर की है। निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है।)

इसके बाद चार चीज़ों से अल्लाह की शरण माँगते हुए यह दुआ पढ़े : "اللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ" (अर्थात : ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण चाहता हूँ जहन्नम के अज़ाब से, क़ब्र के अज़ाब से, जीवन और मृत्यु के फ़ितने से और मसीह-ए-दज्जाल के फ़ितने से।) फिर दुनिया व आखिरत की जो भी भलाई मांगनी हो, मागे। यदि अपने माता-पिता या किसी अन्य मुसलमान के लिए भी दुआ करे, तो आपत्ति की कोई बात नहीं है। नमाज़ चाहे फ़र्ज़ ही या नफ़ल। क्योंकि, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें जब तशहहूद सिखलोया, तो फ़रमाया कि उन्हें जो दुआ पसंद हो, वह दुआ करें। एक अन्य रिवायत में है : फिर जिस दुआ का चाहे चयन करें। जाहिर सी बात है कि इसमें दुनिया एवं आखिरत की तमाम लाभ की बातें शामिल हैं। इसके बाद अस्सलामु अलैक़ुम व रहमतुल्लाह, अस्सलामु अलैक़ुम व रहमतुल्लाह कहते हुए अपने दाएँ एवं दौएँ दोनों ओर सलाम फेरे।

तीन या चार रकात वाली नमाज़ में तशहहूद के लिए बैठना एवं उसका तरीका

14- नमाज़ यदि तीन रकात वाली हो जैसे मग़िब की नमाज़ या चार रकात वाली हो जैसे जुहू, अस्त्र एवं इशा की नमाज़ें, तो उपरोक्त तशहहूद एवं नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दरूद पढ़ने के बाद अल्लाह अकबर कहते हुए घटनों पर टेक लगाकर खड़ा हो जाए तथा दोनों हाथों को कंधों या कानों के बराबर उठो कर पहले की तरह अपने दोनों हाथों को सीने पर रख ले तथा केवल सुरा फ़ातिहा पढ़े। लेकिन, कभी-कभी जुहू की तीसरी एवं चौथी रकात में सुरा फ़ातिहा के बाद कोई दूसरी सुरा भी पढ़ ले, तो हर्ज की कोई बात नहीं है। क्योंकि, अबू सेईद ख़दरी रज़ियल्लाहु अन्हु द्वा़रा वर्णित हीदस से यह प्रमाणित होता है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा किया है। फिर, मग़िब की तीसरी रकात तथा जुहू, अस्त्र एवं इशा की चौथी रकात के बाद वही तशहहूद पढ़े, जिसका उल्लेख दो रकात वाली नमाज़ के तरीके के संबंध में किया जा चुका है। उसके बाद दाहिने एवं बाएँ सलाम फेरे। फिर, तीन बार अस्तग़फ़िरुल्लाह कहे और उसके बाद यह दुआ पढ़े : "اللهم أنت السلام ومنك السلام تباركت يا ذا الجلال والإكرام" (अर्थात : ऐ अल्लाह! तू ही सलामती है, और सलामती तूज़ी से है। तू बहुत बरकत वाला है। ऐ महानता और सम्मान के मालिक!) यदि इमाम हो तो पीछे नमाज़ पढ़ रहे लोगों की ओर मुंह करने से पहले तीन बार (अस्तग़फ़िरुल्लाह) एवं उपरोक्त दुआ पढ़ ले। फिर यह दुआ पढ़े : "لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير، اللهم لا مانع مما أعطيت ولا معطي لما منعت ولا ينفع ذا الجد منك الجد، لا حول ولا قوة إلا بالله، لا إله إلا الله ولا نعبد إلا إياه له النعمة وله الفضل وله الثناء الحسن لا إله إلا الله مخلصين له الدين ولو كره الكافرون" (अर्थात : अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी की बादशाहत है, और उसी की प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर सक्षम है। ऐ अल्लाह! जो तू दे, उसे कोई रोकने वाला नहीं है, और जो तू रोक दे, उसे कोई देने वाला नहीं है, तथा किसी धनवान को उसका धन तेरे अज़ाब से सुरक्षित नहीं रख सकता। अल्लाह के अनग्रह के बिना कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं, अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, और हम केवल उसी की इबादत करते हैं। उसी की नेमत तथा उसी के लिए श्रेष्ठता और प्रशंसा है। अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं है। हम केवल उसी के लिए धर्म को विशुद्ध करते हैं, चाहे काफ़िरों को हमारा यह रवैया अच्छा न भी लगे।) इसके बाद तैंतीस (33) बार "सुबहानल्लाह", तैंतीस (33) बार "अल्हम्दुलिल्लाह", तैंतीस (33) बार "अल्लाह अकबर" कहे और सौ की गिनती इस दुआ के द्वारा पूरी करे : "لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير"। इसके बाद आयतुल कर्सी पढ़े। फिर सुरा इख़लास, सुरा फ़लक एवं सुरा नास पढ़े। फ़ज़्र एवं मग़िब की नमाज़ के बाद इन तीनों सुरतों का तीन-तीन बार पढ़ना मुस्तहब है। क्योंकि इस विषय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हदीस वर्णित है। ध्यान रहे कि इन तमाम ज़िक्रों का पढ़ना मुस्तहब है, वाजिब (अनिवार्य) नहीं।

प्रत्येक मुसलमान (पुरुष एवं महिला) के लिए निम्नलिखित नमाज़ें पढ़ना सुन्नत है : जुहू की नमाज़ से पहले चार (4) रकात तथा जुहू की नमाज़ के बाद दो (2) रकात, मग़िब की नमाज़ के बाद दो (2) रकात, इशा की नमाज़ के बाद दो (2) रकात तथा फ़ज़्र की नमाज़ के पहले दो (2) रकात। यह कुल मिला कर बारह (12) रकातें हैं। इन्हें "सुनन-ए-रवातिब" कहा जाता है। क्योंकि, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम घर में होने की अवस्था में इन नमाज़ों को नियमित रूप से पढ़ते थे। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यात्रा की अवस्था में "सुन्नत-ए-रवातिब" पढ़ते नहीं थे। लेकिन, फ़र्ज़ की सुन्नत एवं वित्र की नमाज़ को यात्रा एवं ठहराव दोनों ही अवस्थाओं में पाबंदी के साथ पढ़ा करते थे। बेहतर यह है कि "सुन्नत-ए-रवातिब" एवं "वित्र" को घर में पढ़ा जाए। लेकिन, यदि कोई व्यक्ति इन्हें मस्जिद में पढ़ता है, तो कोई हर्ज नहीं है। क्योंकि, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है : "पुरुष की सर्वश्रेष्ठ नमाज़ वह है, जो आदमी अपने घर में पढ़ता है, सिवाय फ़र्ज़ नमाज़ के।" इन बारह रकात सुन्नत की पाबंदी करना जन्नत में प्रवेश के कारणों में से है, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जो व्यक्ति दिन एवं रात में बारह (12) रकात (सुन्नत) नमाज़ पढ़े, उसके लिए जन्नत में एक घर बनाया जाएगा।" इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है। इसके अतिरिक्त यदि कोई व्यक्ति अस्त्र की नमाज़ से पहले चार (4) रकात, मग़िब की नमाज़ से पहले दो (2) रकात तथा इशा की नमाज़ से पहले दो (2) रकात पढ़ ले, तो अच्छा है। क्योंकि, इस विषय में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित हदीसें मिलती हैं। अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है। अल्लाह की प्रशंसा एवं शांति हमारे नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर, आपके परिवार, सहाबा और उन सभी पर, जो क़यामत तक उनके रास्ते पर चलें।

Index

संपूर्ण रूप से वजू करना	3
क्लिबला की ओर मुख करना	4
तकबीर-ए-तहरीमा, तकबीर कहते समय दोनों हाथों को उठाना और उसके बाद दोनों हाथों को सीने पर रखना	4
नमाज़ आरंभ करने की दुआ	4
रुकू, उससे उठना और उससे जुड़ी बातें	5
सजदा, सजदे से उठना तथा इससे संबंधित बातें	7
दो सजदों के बीच बैठना और इसका तरीका	7
दो रकात वाली नमाज़ में तशहहुद के लिए बैठना तथा उसका तरीका	8
तीन या चार रकात वाली नमाज़ में तशहहुद के लिए बैठना एवं उसका तरीका	9